Reg. No.V-41950

ISSN 2231 1483

Wisdom Herald

International Multidisciplinary Refereed Quarterly Research Journal

U.G.C.- S.N0. 480

Journal No. 40878

Vol-VIII No.-4 Oct.- Dec.-2017

Chief -Editor

Prof. Shyam Nath Mishra

Executive -Editor

Dr. Anjani Kumar Mishra

Editor

Dr. Aparna

Published by

Society for Indo-Tibetan Buddhist Studies Delhi

Approved by U.G.C., New Delhi

Scanned with CamScanner

शिशुपालवध में रस-विमर्श 83-88
अमरेश यादव

भूमण्डलीकरण : भारतीय संदर्भ, विमर्श एवं विकल्प 89-94
विनोद कुमार

भारत में फसल संयोजन का सतत् कृषि विकास पर प्रभावः 95-102
जूही कुमारी

भारतीय संस्कृति में 'हो' समाज का उद्भव एवं विकास 103-112
सुजीत कुमार

गदर आंदोलन की कविता : राजकीय, सामाजिक तथा......... 113-118
अतुल कुमार जायसवाल

भारत में नदी जोड़ो परियोजना के निहितार्थ 119-126
अनूप कुमार सिंह

चम्पारण आंदोलन में पं॰ राजकुमार शुक्ल की भूमिका............ 127-134
बिपीन कुमार

कृष्णसंजीवनी श्रीराधा :– श्रीराधासुधानिधि के परिप्रेक्ष्य में 135-140
रानी मिश्रा

प्राचीन भारत में राज मण्डल का ऐतिहासिक अध्ययन 141-146
सदानन्द पासवान

वाल्मीकिरामायण में आचरण 147-154
डॉ. संजय कुमार

समाजवादी आन्दोलन में वैशाली जिला की भूमिका 155-162
डॉ. अमित राज

वैदिककालीन राजनीतिक विकासः एक अवलोकन 163-166
माला देवी

"प्राथमिक शिक्षा" अगति, दुर्गति या प्रगति 167-168
उदय शंकर सत्यार्थी

वराहमिहिर और ज्योतिष : एक अध्ययन 169-174
स्वर्णा

Scanned with CamScanner

वाल्मीकिरामायण में आचरण

डॉ. संजय कुमार*

वाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृति का प्राणभूत ग्रन्थ है, इसमें भारत का सांस्कृतिक चेतना समाहित है, जिसका प्रत्येक पराग मानव जीवन को पग–पग पर आदर्शमय आचरण की शिक्षा देता है। आचरण का शाब्दिक अर्थ सम्यक् कार्य–व्यवहार है। इसी के द्वारा हम अपने कार्य–व्यावहार को अनुशासित करते हैं। आचरण ही हमारे कार्य–व्यावहार की एक मात्र स्वस्थ परम्परा है जो सभी के जीवन को सुसंस्कृत बनाती है। भारत का गौरव आचरण है, जिसे विश्व याद करता है। वाल्मीकि रामायण का जन्म भी श्रेष्ठ आचरण को इस धराधाम पर लाने के उद्देश्य से ही हुआ है। महर्षि की शोकमयीवाणी से आर्त हो स्वयं ब्रह्मा जी उपस्थित होकर उन्हें रामचरित लिखने के लिए प्रेरित किया, जिसके व्याज से महर्षि वाल्मीकि ने आचरण का ऐसा महल बनाया जो विश्व साहित्य में अमर हो गया। उसके अमरता का मूल कारण आचरण है। श्रेष्ठ आचरण ही मानवता की कसौटी है। वह आचरण हमें परम्परा से प्राप्त होता है। जिसके विषय में मनुस्मृतिकार लिखते हैं–

तस्मिन देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः।
वर्णानां सान्तारालानां स सदाचार उच्यते।।[1]

अर्थात् उस देश में अनादि पिता–पुत्र, गुरु शिष्यादि परम्परा के क्रम से चला आया हुआ जो मूर्धावसिक्तादि अन्तरालजों का और ब्रह्माणादि श्रेष्ठ लोगों का आचरण है वही सदाचार है। यानि आचरण हमें सदैव परम्परा से प्राप्त होता है। परम्परा भूत एवं वर्तमान की कड़ी कही जाती है। कड़ी इसलिए कि वह भूत को वर्तमान से जोड़ती है। जो अपने पूर्वजों की श्रेष्ठ थासी से जुड़ा अपनी परम्परा को पाया। यह परम्परा प्रथित गुण स्वयं प्रकाशित हो जाते हैं। भामिनीविलास में कहा गया है–

सन्तः स्वतः प्रकाशन्ते गुणा न परतो नृणाम्।
आमोदो नहि कस्तूर्याः शपथेन विभाव्यते।।[2]

अर्थात् मनुष्यों में विद्यमान आचरण (गुण) अपने आप प्रकाशित हो जाते हैं, दूसरे से नहीं, क्योंकि कस्तूरी की सुगंध शपथ के द्वारा नहीं जनाई जाती है वह स्वयं जानी जाती है। वाल्मीकि रामायण में वर्णित आचरण भी स्वयं प्रकाशित होता है। पात्र के द्वारा आचरण का प्रकाशन नहीं किया जाता है। वस्तुतः आचरण इस जीवन का आन्तरिक धर्म है। जब आचरण का दिखावा होने लगता है वह आडम्बर का रूप ग्रहण कर लेता है और आडम्बर कभी भी जीवन मूल्य नहीं बन सकता है। जीवन मूल्य तो सदा आन्तरिक गुण ही बना करते हैं। विश्व साहित्य साक्षी है

*सहायक–आचार्य संस्कृत विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Scanned with CamScanner